IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक शालाओं के विद्यार्थियों में विद्यालयी अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन।

डॉ0 उमेश सिंह, (असि0 प्रोफेसर)

एम0एड0 विभाग

डी0वी0कॉलेज,उरई जालौन

Abstract :

मानव एक चिन्तनशील प्राणी है, वह अपने क्रिया कलापों के द्वारा अपने आपको समाज में प्रतिष्ठत करता रहता है। मानवीय शक्तियों के विकास में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रत्येक राष्ट्र अपनी आवश्यकताओं, आदर्शो की एक विशिष्ट शैक्षिक व्यवस्था की संरचना बनाता है। इस संरचना में विगत के अनुभवों से लाभ लेकर प्रत्येक राष्ट्र वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था में परिवर्तन लाने का प्रयास करता है। क्योंकि शिक्षा वह प्रक्रिया है जो राष्ट्र के नागरिकों में राष्ट्रीय चरित्र का विकास कर राष्ट्रीय सभ्यता और संस्कृति के अनुरूप राष्ट्र को नये नागरिक प्रदान करने में सहायक होती है। मानव का शिक्षा से सम्बन्ध आदिकाल से रहा है और यदि कहा जाए कि शिक्षा के अभाव में मानव समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती है तो यह अतिश्योक्ति नहीं होगी। प्रस्तुत अध्ययन का **उद्देश्य माध्यमिक षालाओं के विद्यार्थियों में विद्यालयी अभिवृत्ति एवं** शैक्षिक **उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन** करना है। शोधार्थी ने प्रतिदर्श हेतु 50 छात्र एंव 50 छात्राओं को लिया है। अध्ययन हेतु प्रस्तुत लघशोध केवल माध्यमिक विद्यालयों तक ही सीमित है। शोधार्थी द्वारा अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। प्रस्तुत अनुसंधान में शोधार्थी द्वारा विद्यार्थियों के दो गुणों यथा विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि का मापन किया गया है। विद्यालयी अभिवृत्ति के मापन के लिये **डा0 डी0 गोपालराव** द्वारा निर्मित मापनी (SAI) का प्रयोग किया गया है एवं शैक्षिक उपलब्धि मापन के लिये जालौन जिले के उरई शहर तथा उसके आस–पास के विद्यालयों के कक्षा 10 के छात्र–छात्राओं के प्राप्तांकों को ही लिया गया है। आंकड़ों के संयोजन के आधार पर वर्तमान में छात्र एवं छात्राएं दोनों में सीखने की स्थितियाँ भिन्न प्रकार की होती हैं।

आज हमारे समाज में शिक्षा दिनों–दिन महत्व प्राप्त कर रही है। आज शहरों के साथ गाँवों में भी शिक्षा के प्रति लोग जागरूक हो रहे है। वर्तमान समय में व्यक्ति अपने कार्यों एवं व्यवहार के अनुकूल गृह, विद्यालय, समाज में अपना स्थान निर्माण करता है जिसके लिये व्यक्ति अपनी बौद्धिक क्षमता से अपने लिये साधनों व मार्गों का निर्माण करता है। विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति एक नवीन सम्प्रत्यय है प्रायः ऐसा देखा जाता है कि जिन बालकों की बुद्धिलब्धि कम भी होती है। उनमें भी विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति होती है। इस प्रकार विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति सफल विकास हेतु अत्यन्त आवश्यक है। क्योंकि प्रायः देखा जाता है कि जिस व्यक्ति में विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति होती है। वह व्यक्तिगत समस्याओं तथा अन्य समस्याओं के साथ–साथ अपने शैक्षिक काल में भी उन्नति की ओर अग्रसर होता है अर्थात् वह अपनी शैक्षिक उपलब्धि को भी प्रभावित करता है जो उसके भविष्यगत व्यवसायिक कार्यक्रम को भी सफल

बनाने में सहायक होती है। इस प्रकार अभिवृत्ति केवल शैक्षिक उपलब्धि से ही नहीं अपितु अन्य जीवन के महत्वपूर्ण पक्षों से भी सम्बन्धित है। शिक्षा सम्पूर्ण राष्ट्र की उन्नति का मूल आधार है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि बालक–बालिकाओं को शिक्षा प्राप्ति के लिये अभिप्रेरित किया जाये तथा शिक्षा व उससे सम्बन्धित उपलब्धियों को हासिल करें। छात्र एवं छात्राओं विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति के कारण स्वयं समाज के नियम के अनुकूल बनाये रखते है। जब बालक में विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति नहीं होती तो वह स्वयं को परिस्थिति के अनुकूल नहीं पाता।

प्रस्तुत अध्ययन में इसी समस्या की तरफ लोगों का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया गया है। जिससे भावी माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षा तथा देश की व्यवस्था को उत्तम एवं जागरूक नागरिक बनाने की भूमिकाओं को बेहतर तरीके से अदा करके समाज एवं स्वयं विकास में योगदान दिया जा सके। आज का विद्यार्थी कल का निर्माता है। शिक्षित छात्र–छात्रायें विपरीत परिस्थितियों में एकाग्र होकर कार्य करने की क्षमता रखते है। इसके अतिरिक्त अभिवृत्ति द्वारा हम विवेकपूर्ण ढंग से कार्य करते है और अनेक प्रकार की समस्याओं से बचते है और अपने आपको सही ढंग से प्रस्तुत करते है। विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति तथा शैक्षिक उपलब्धि दोनों अलग–अलग रूप में शिक्षा प्रक्रिया को प्रभावित करते है। प्रायः देखा गया है कि उच्च अभिप्रेरणा का छात्र होने पर भी उसके शैक्षिक परिणाम संतोषजनक प्राप्त नहीं हो पाते व छात्र शैक्षिक पहलुओं पर संतुष्ट हो लेकिन शैक्षिक अभिप्रेरणा का अभाव हो।

शब्द कुंजी– विद्यालयी अभिवृत्ति, शैक्षिक उपलब्धि, माध्यमिक विद्यालय ।

प्रस्तावना–

भारतीय शिक्षा का इतिहास बहुत ही प्राचीन है। जिसमें शिक्षा के विकास का वर्णन हमें वेदों में मिलता है। प्राचीन काल में शिक्षा बालक के सर्वागीण विकास पर बल देती थी। बालक का सर्वागीण विकास केवल विद्यालय की चाहरदीवारी के अंदर ही संभव नहीं है। अपितु बालक का सर्वांगीण विकास तभी संभव जब उसकी इच्छा हो। बालक सर्वप्रथम परिवार में जन्म लेता है। परिवार का वातावरण बालक की क्रियाओं के विकास में सहायक होता है परन्तु प्रत्येक परिवार का वातावरण भिन्न–भिन्न प्रकार का होता है। परिवार का आर्थिक स्तर भी एक दूसरे से भिन्न होता है। जिसके फलस्वरूप बालक का पालन पोषण भी अलग–अलग तरीके से होता है जिस परिवार का आर्थिक स्तर ऊँचा नहीं है उनके बालक अधिकतर सरकारी विद्यालयों में पढ़ने जाते है। दोनों विद्यालयों का वातावरण एक दूसरे से भिन्न होता है। जिसके कारण समान कक्षा में होते हुए भी उनकी अधिगम शैली समान नहीं होती है।

विद्यालयी अभिवृत्ति - प्रत्येक विद्यालय में भिन्न–भिन्न स्थानों के बालक पढ़ने आते है। विद्यालय के वातावरण के प्रभाव से पूर्व ही उन पर उनके परिवार समाज एवं स्थानीय घटनाओं का प्रभाव विद्यमान रहता है। सभी बालक अपनी व्यक्तिगत भिन्नताओं एवं आकांक्षाओं के आधार पर अधिगम करते है। सभी का अधिगम करने का तरीका एक दूसरे से भिन्न होता है। शिक्षा दी जाने से पहले यह आवश्यक है कि हमें यह जान लेना चाहिए कि जिसे शिक्षा ग्रहण करनी है। उसकी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति कैसी है। अभिवृत्ति से तात्पर्य व्यक्ति के उस दृष्टिकोण से है जिसके कारण यह किन्हीं वस्तुओं, व्यक्तियों, संस्थानों, परिस्थितियों, योजनाओं आदि के प्रति किसी विशेष प्रकार का व्यवहार करता है अर्थात किसी व्यक्ति को शिक्षा के प्रति उसकी अभिवृत्ति कैसी है इसका पता लगाना होता है। उसका शिक्षा के प्रति व्यवहार कैसा है वह शिक्षा में रूचि लेता है या नहीं इसका पता लगाया जाता है। अभिवृत्ति व्यवहार को दिशा प्रदान करने वाली वह अर्जित प्रवृत्ति है जो व्यक्ति को विशेष वस्तु या वस्तुओं के प्रति एक निश्चित प्रकार का व्यवहार करने को तत्पर करती है वशर्ते कि वातावरण जन्य परिस्थितियों में कोई प्रतिकूल परिवर्तन न हो।

अभिवृत्ति- किसी मनोवैज्ञानिक उद्देश्य के प्रति तीव्र सकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव है। साधारण शब्दों में मनोवृत्ति व्यक्ति के मन की एक दशा होती है जिसके द्वारा वह समाज की विभिन्न परिस्थितियों, वस्तुओं, व्यक्तियों आदि के प्रति अपने विचार एवं मनोभाव को प्रकट करता है। अभिवृत्ति के आधार पर किसी छात्र की शैक्षिक उपलब्धि से अभिप्राय छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान, बोध, कौशल, अनुपयोग आदि योग्यताओं की मात्रा से है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के द्वारा छात्रों ने अपनी योग्यताओं की मात्रा से है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के द्वारा छात्रों ने अपनी योग्यताओं का विकास किया है, यही उनकी उपलब्धि काा सूचक है। शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक उपलब्धि पर शोध कार्य करने वाले शोधार्थियों के लिये सबसे अधिक रूचि व जिज्ञासा का विषय रहा है।

शैक्षिक उपलब्धि **-** शैक्षिक उपलब्धि दो शब्दों से मिलकर बना है–शैक्षिक तथा उपलब्धि अर्थात विद्यालय से सम्बन्धित शैक्षिक अनुभवों के परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में होने वाले व्यवहार परिवर्तन को ही शैक्षिक उपलब्धि दो शब्दों से मिलकर बना है–शैक्षिक तथा उपलब्धि अर्थात विद्यालय से सम्बन्धित शैक्षिक अनुभवों के परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में होने वाले व्यवहार परिवर्तन को ही शैक्षिक उपलब्धि कहा जाता है। विद्यालय में भिन्न–भिन्न अभिवृत्ति के बच्चे आते है अर्थात उनकी शैक्षिक उपलब्धि उनकी अभिवृत्ति के आधार पर नापी जाती है अर्थात् जिस बालक की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति अच्छी होती है उसकी शैक्षिक उपलब्धि भी अच्छी होती है अर्थात उच्च होती है। शैक्षिक उपलब्धि शब्द शिक्षा तथा उपलब्धि दो शब्दों से मिलकर बना है शिक्षा उपलब्धि से यहां तात्पर्य पुस्तकीय ज्ञान प्राप्ति की सफलता से सम्बन्धित है।

अध्ययन की आवष्यकता व महत्व :

शिक्षा मानव जीवन के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है। जब किसी राष्ट्र या समाज में परिवर्तन व जनचेतना की आवश्यकता महसूस हुई है तो बुद्धजीवी वर्ग की निगाहे शिक्षा पर ही आकर टिकी है। आज के वर्तमान युग की परिस्थितियाँ अत्यधिक जटिल हो गयी है। मानव आवश्यकताएँ दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है और इन आवश्यकताओं की पूर्ति में शिक्षा अहम भूमिका निभाती है। वर्तमान परिस्थितियों की जटिलताओं के बढ़ने के कारण शिक्षा प्रदान करने का कार्य भी अत्यधिक चुनौतीपूर्ण हो गया है।

शिक्षा अपने लक्ष्य को तभी प्राप्त कर सकती है। जब उसके प्रत्येक चरण पर बल दिया जाये। अर्थात शिक्षा में प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च प्राथमिक सभी स्तरों पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है। माध्यमिक स्तर की शिक्षा को विशेष रूप से महत्व दिया जाता है क्योंकि माध्यमिक स्तर की शिक्षा के बाद ही छात्र अलग–अलग क्षेत्रों में जाते है। कोई विज्ञान के क्षेत्र में तो इंजीनियरिंग के क्षेत्र में जाते है। इसीलिए माध्यमिक स्तर की शिक्षा पर विशेष बल दिया जाना आवश्यक है। अतः माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति के जानने की आवश्यकता होती है क्योंकि इसी आधार पर छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि को भी ज्ञात किया जाता है।

वर्तमान में माध्यमिक स्तर की शिक्षा में सुधार हेतु बहुत प्रयोग किये जा रहे है। इसके उपरान्त भी छात्र–छात्राओं की शिक्षा में कोई ज्यादा सुधार नहीं है। अतः इन समस्याओं के सुलझाने हेतु माध्यमिक स्तर की शिक्षा पर शोध करने की आवश्यकता है। शोधकर्ती को प्रस्तुत समस्या के अध्ययन की आवश्यकता इसलिये महसूस हुई क्योंकि वर्तमान परिदृश्य में अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं को विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति से सम्बन्धित समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। जिसके कारण उनके जीवन के साथ–साथ शैक्षिक उपलब्धि पर भी गहरा प्रभाव पड़ रहा है। वर्तमान में अभिवृत्ति का अभाव देखने को मिलता है। अतः प्रस्तुत लघु शोध के माध्यम से यह जानने का प्रयास

किया जायेगा कि माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की विद्यालय के प्रति अभिृत्ति तथा शैक्षिक उपलब्धि में क्या सम्बन्ध है।

शीर्षक कथन – माध्यमिक षालाओं के विद्यार्थियों में विद्यालयी अभिवृत्ति एवं शैक्षिक **उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन**

अध्ययन के मुख्य उद्देष्य –

1. माध्यमिक शालाओं के विद्यार्थियों की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक शालाओं के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक शालाओं के ग्रामीण छात्रों की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
4. माध्यमिक शालाओं के शहरी छात्राओं की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
5. माध्यमिक शालाओं के विद्यार्थियों की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं –

1. माध्यमिक शालाओं के विद्यार्थियों की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक शालाओं के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक शालाओं के ग्रामीण छात्रों की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं है।
4. माध्यमिक शालाओं के शहरी छात्राओं की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं है।
5. माध्यमिक शालाओं के विद्यार्थियों की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई अन्तर नहीं है ।

अध्ययन की परिसीमाएं –

समय तथा परिस्थिति को देखते हुए शोधार्थी ने अपना अध्ययन कार्य उच्च माध्यमिक विद्यालयों तक ही सीमित रखा है।

1. शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत न्यादर्श में 100 छात्र–छात्राओं को ही लिया गया है।
2. अध्ययन में उरई तथा उरई के आस–पास के ग्रामीण विद्यालयों को ही लिया गया है।
3. अध्ययन में केवल विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि चरों को ही लिया गया ।
4. अध्ययन में केवल यू0पी0 बोर्ड इलाहाबाद से सम्बद्ध विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं को ही लिया जायेगा।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन –

शुक्ला, डा0 निधि (2021) ने अपना अध्ययन विद्यालयी वातावरण के प्रति विद्यार्थियों का प्रत्यक्षीकरण एवं उनका स्वत्व बोध : एक अध्ययन, नामक शीर्षक पर किया। अध्ययन हेतु घटनोत्तर विधि का शोधार्थी द्वारा अनुप्रयोग करते हुए न्यादर्ष के रूप में लखनऊ शहर के 600 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया, जिसमें 300 छात्र तथा 300 छात्राएं शामिल थी।

विद्यालयों का चयन द्विस्तरीय यादृच्छिक प्रविधि द्वारा किया गया। परिणामों से निष्कर्ष निकला कि विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण प्रत्यक्षीकरण एवं स्वत्व बोध के मध्य सार्थक व धनात्मक सम्बन्ध है।

कुमार, डा0 रवि (2020) ने अपना अध्ययन मुरादाबाद जिले के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की अनुशासन के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, नामक शोध शीर्षक पर कार्य किया। अध्ययन में मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक स्तर के 50 विद्यार्थियों का चयन किया गया। अध्ययन में स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग कर निष्कर्ष के परिणाम में बताया गया कि –

1. मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी के vuq'kklu में सार्थक अन्तर पाया गया।
2. मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के vuq'kklu में सार्थक अन्तर पाया गया ।

श्रीवास्तव, अभिषेक एव श्रीवास्तव, लाल, आर0एन0 (2019) ने अपने अध्ययन विद्यालयी अभिवृत्ति का विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता पर प्रभाव, नामक शीर्षक पर शोध कार्य किया। शोध हेतु U;k;n'kZ के रूप में उत्तर izns'k के सोनभद्र जनपद के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के कक्षा 11 में अध्ययनरत कुल 800 विद्यार्थियों का चयन किया गया। शोधार्थी के अध्ययन का उद्देश्य शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं पर शैक्षिक चिंता के प्रभाव एवं शैक्षिक चिंता का लैंगिक भिन्नता पर प्रभाव विद्यालयी अभिवृत्ति के प्रति क्या पड़ता है उसको ज्ञात करना था।

शोध के निष्कर्ष से ज्ञात हुआ कि ग्रामीण–'kgjh क्षेत्रों के हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयी अभिवृत्ति का छात्रों की शैक्षिक चिंता पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। जबकि छात्राओं की शैक्षिक चिंता पर इसका सार्थक प्रभाव पड़ता है। दोनों माध्यमों के विद्यालयी वातावरण का विद्यार्थी की शैक्षिक चिंता का उनकी लैंगिक भिन्नता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

पाण्डेय, उर्मिला एवं तिवारी, कुमार संजीत (2017) ने अपना अध्ययन, रायपुर जिले के शासकीय एवं v'kkldh; उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शालेय वातावरण का विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिक्षमता पर प्रभाव का अध्ययन, नामक शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अध्ययन के निष्कर्ष में शासकीय एवं v'kkldh; उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के शालेय वातावरण में सार्थक अन्तर पाया। अध्ययन में दोनों स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिक्षमता में भी सार्थक अन्तर पाया गया तथा शासकीय एवं v'kkldh; उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के शालेय वातावरण तथा उनकी वैज्ञानिक अभिक्षमता के मध्य किसी प्रकार का कोई भी सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया गया।

शोध विधि – प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रतिदर्ष – प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा प्रतिदर्श चयन हेतु स्तरित यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है।

उपकरण – प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त विद्यालयी अभिवृत्ति के मापन के लिये **डा0 डी0 गोपालराव** द्वारा निर्मित मापनी (SAI) का प्रयोग किया गया है एवं शैक्षिक उपलब्धि मापन के लिये जालौन जिले के उरई शहर तथा उसके आस–पास के विद्यालयों के कक्षा 10 के छात्र–छात्राओं के प्राप्तांकों को ही लिया गया ळें

सांख्यिकीय विधि – अमुख कार्य में जांचकर्ता ने sample के माध्यम से प्राप्त आंकड़ों का मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि, तथा क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग करते हुए परिकल्पनाओं की व्याख्या की है।

आंकड़ों का विष्लेषण –

परिकल्पना क्रमांक– 1. माध्यमिक शालाओं के विद्यार्थियों की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या 4.1

विद्यार्थी	संख्या N	मध्यमान N	मानक विचलन SD	क्रान्तिक अनुपात C.R.	सार्थकता स्तर	शून्य परिकल्पना
छात्र	50	103.92	12.71	2.62	0.01 – 2.61	सार्थक (अस्वीकृत)
छात्रायें	50	102.28	13.25		0.05 – 2.97	असार्थक (स्वीकृत)

0.05 = 2.61 जहाँ मुक्तांश

0.01 = 2.97 (df) = 98

उपरोक्त तालिका संख्या 01 के आधार पर छात्र–छात्राओं की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांकों के आधार पर छात्र–छात्राओं के मध्यमान क्रमशः 103.92 तथा 102.28 तथा मानक विचलन 12.71 तथा 13.25 है। इन दोनों समूह के मध्यमानों एवं मानक विचलनों के मान के आधार पर गणना द्वारा क्रान्तिक अनुपात 2.62 प्राप्त हुआ है। यह मान मुक्तांश के 98 के 0.01 तथा 0.05 सार्थकता स्तरों पर क्रान्तिक अनुपात के सारणीमान 2.61 तथा 2.97 है। अतः शून्य परिकल्पना सार्थकता स्तर 0.01 पर अस्वीकृत तथा असार्थकता स्तर 0.05 पर स्वीकृत है। विद्यार्थियों के मध्यमानों में छात्रों का मध्यमान अधिक है। परिणामतः छात्राओं की अपेक्षा छात्रों की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति अधिक है।

आरेख संख्या–01

माध्यमिक शालाओं के विद्यार्थियों की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति में से सम्बन्धित प्राप्तांकों के मध्यमान प्रमाणिक विचलन एवं टी–टेस्ट का दण्डारेखीय प्रदर्शन-

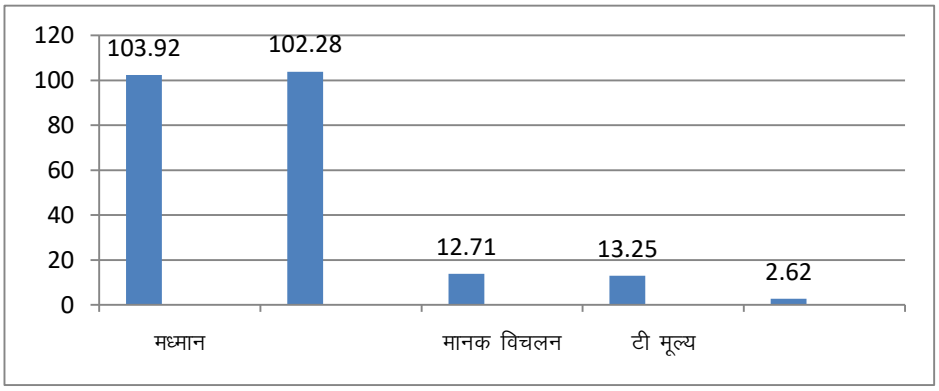

द्वितीय परिकल्पना का परीक्षण 2. माध्यमिक शालाओं के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या 4.2

विद्यार्थी	संख्या N	मध्यमान N	मानक विचलन SD	क्रान्तिक अनुपात C.R.	सार्थकता स्तर	शून्य परिकल्पना
छात्र	50	326.44	34.77	9.70	0.01 पर	अस्वीकृत
छात्रायें	50	316.65	33.97		0.05 पर	अस्वीकृत

0.05 = 2.98 जहाँ मुक्तांश (df) = 98

0.01 = 2.63

उपरोक्त तालिका संख्या 02 के आधार पर छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों के आधार पर छात्र–छात्राओं के मध्यमान क्रमशः 326.44 तथा 316.65 तथा मानक विचलन क्रमशः 34.77 तथा 33.97 है। इन दोनों समूह के मध्यमानों एवं मानक विचलनों के मान के आधार पर गणना द्वारा क्रान्तिक अनुपात 9.70 प्राप्त हुआ है। यह मान स्वतन्त्रता के अंश 78 के 0.01 तथा 0.05 सार्थकता स्तरों पर क्रान्तिक अनुपात के सारणीमान 2.63 तथा 2.98 है। अतः शून्य परिकल्पना सार्थकता स्तर 0.01 पर अस्वीकृत तथा असार्थकता स्तर 0.05 पर अस्वीकृत है। अतः .01 स्तर पर छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है। छात्र–छात्राओं के मध्यमानों में छात्रों का मध्यमान अधिक है। परिणामतः छात्रओं की अपेक्षा छात्र में शैक्षिक उपलब्धि अधिक है।

आरेख संख्या–02

माध्यमिक शालाओं के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित प्राप्तांकों के मध्यमान प्रमाणिक विचलन एवं टी–टेस्ट का दण्डारेखीय प्रदर्शन।

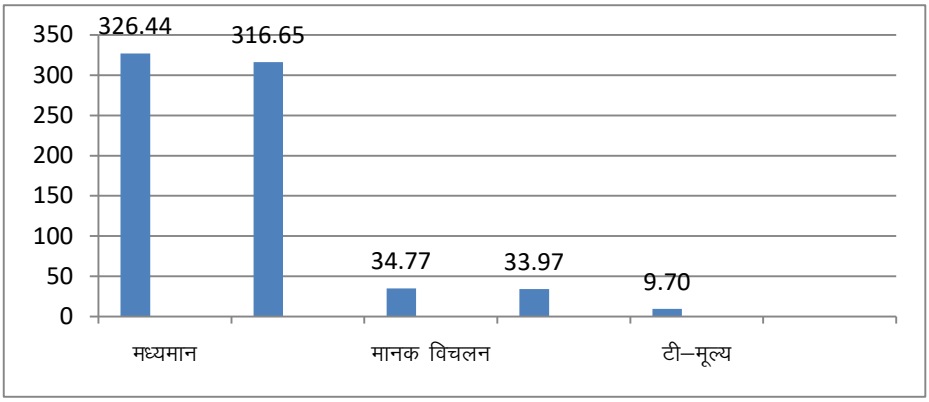

तृतीय परिकल्पना का परीक्षण. 3.माध्यमिक शालाओं के ग्रामीण छात्रों की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं है।

चर	संख्या	सहसम्बन्ध गुणांक
ग्रामीण छात्रों की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति	25	दोनों चरों के बीच
ग्रामीण छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि	25	सहसम्बन्ध गुणांक 0.003 होगा

उपरोक्त तालिका संख्या 03 के आधार पर ग्रामीण छात्रों की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.03 प्राप्त हुआ। परिणामतः दोनों चरों के बीच अति निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध है।

चतुर्थ परिकल्पना का परीक्षण. 4. माध्यमिक शालाओं के शहरी छात्राओं की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं है।

चर	संख्या	सहसम्बन्ध गुणांक
शहरी छात्राओं की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति	25	सहसम्बन्ध गुणांक दोनों चरों के बीच सहसम्बन्ध गुणांक 0.02 होगा
शहरी छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि	25	

उपरोक्त तालिका संख्या 04 के आधार पर शहरी छात्राओं की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.02 प्राप्त हुआ। परिणामतः दोनों चरों के बीच अति निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध है

पंचम परिकल्पना का परीक्षण. 5. माध्यमिक शालाओं के विद्यार्थियों की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई अन्तर नहीं है ।

चर	संख्या	सहसम्बन्ध गुणांक
विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति	100	दोनों चरों के बीच सहसम्बन्ध गुणांक 0.012 होगा
शैक्षिक उपलब्धि	100	

उपरोक्त तालिका संख्या 05 के आधार पर विद्यार्थियों की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.012 प्राप्त हुआ। परिणामतः दोनों चरों के बीच अति निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध है।

शैक्षिक निहितार्थ –

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य विद्यार्थी वर्ग के लिए उपयोगी एवं लाभप्रद है, क्योंकि शोध अध्ययन में विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति, शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया है। चूंकि विद्यालयी प्रक्रिया में अध्यापक प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप में विद्यार्थी से जुड़ा रहता है। विद्यालयी वातावरण का प्रभाव भी विद्यार्थी की शैक्षिक उत्थान में मदद करता है। विद्यालयी वातावरण से प्रभावित होकर विद्यार्थी उसके गुण व अवगुण की परख कर उसके प्रति अपना नजरिया अथवा धारणा बना लेता है और यही धारणा आगे चलकर उस विद्यार्थी की सफलता की कुंजी बन जाती है। शोध के परिणाम से यह भी ज्ञात होता है कि षिक्षण प्रक्रिया में विद्यालय, पाठ्यक्रम, षिक्षक, षिक्षार्थी से पूर्ण एवं उसे उन्नत बनाने में लाभकारी होती है। पूर्व के शोधों और प्राप्त शोध के परिणामों से इस बात को तो बल मिलता है कि यदि विद्यालय में विषेष सुविधाएं विद्यार्थियों को प्रदान की जाएं और उनका संयोजक एवं क्रियान्वयन विधिवत किया जाए तो षिक्षार्थी का विद्यालयी दृष्टिकोण विकसित होता है और साथ ही बालक विभिन्न पाठ्य सहगामी क्रियाओं को कर शैक्षिक उपलब्धि के गुण भी विकसित कर लेता है।

सहयोगात्मक अधिगम युक्त वातावरण विद्यार्थी में सृजन के गुण विकसित करने में सहायक होगा। एक विद्यार्थी अपने सम्पूर्ण शैक्षिक काल में कितना विकसित होगा यह सम्पूर्ण रूप से उसके स्कूली वातावरण की संरचना पर निर्भर करता है। प्रस्तुत शोध में स्पष्ट हुआ है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का सम्बन्ध विद्यालयी वातावरण से पूर्ण रूप में है। विद्यार्थियों के विकास की पटकथा विद्यालयी वातावरण व षिक्षकों के सहयोग से तैयार की जाए जिसमें मुख्य रूप से बालक को अधिगम हेतु, तैयार किया जाए। ज्ञान रूपी मन्दिर में षिक्षक एवं षिक्षार्थियों के मध्य एवं भौतिक तथा अभौतिक वातावरण के मध्य सम्बन्धों को समझने में मदद करता है साथ ही यह भी समझने में सहायता करता है कि षिक्षार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि को विद्यालय वातावरण कैसे प्रभावित करता है ? विद्यालय में भयमुक्त वातावरण, सहयोगात्मक रवैया, ज्ञानात्मक तथा षिक्षार्थी केन्द्रित षिक्षा व्यवस्था विद्यार्थी को क्रियात्मक होने में सहायता करती है। बालक के लिए घर उसकी शुरूआती षिक्षा–दीक्षा का मुख्य केन्द्र बिन्दु होता है। समय के साथ बालक की जिज्ञासा और सीखने की क्षमता में वृद्धि होने लगती है परिणाम स्वरूप उसे विद्यालयी प्रांगण में भेजा जाता है, क्योंकि यह एक ऐसा स्थान है जहाँ छात्रों को सुरक्षित और सकारात्मक वातावरण तो प्राप्त होता ही है साथ ही उसकी षिक्षण सम्बन्धी आवष्यकताओं की पूर्ति भी होती है। विद्यालय की संस्कृति व उसके वातावरण का प्रभाव बालक की सफलता, खुषी और उपलब्धि पर भी देखने को मिलती है। चूंकि अक्सर यह देखा गया है कि विद्यार्थी विद्यालय को जिस नजरिये से देखना, सोंचना और महसूस करना शुरू कर देता है, वही स्थितियाँ उसे सीखने के लिए मानसिक और भावात्मक रूप से आगे ले जाती है। समाज में जिस तरह से व्यक्ति का व्यक्तित्व भिन्न प्रकार का होता है ठीक उसी प्रकार से विद्यालय भी अपनी विषेषता के लिए जाने जाते है, अब यह बालक पर निर्भर करता है कि वह उसे किस रूप में ले रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

एन0के0 चौधरी (2014)''शिक्षण एवं अधिगम के मनोसामाजिक आधार'',शिक्षा प्रकाशन, जयपुर, पृ0सं0–36

सिंह, ए0आर0 (2017)''अनुसंधान विधियाँ'' द्वितीय संस्करण हरिप्रसाद भार्गव हाउस, आगरा, पृ0सं0–241

खान एस0 (2015)''उच्च शिक्षा मनोविज्ञान'' विकाश पब्लिशिग हाउस, नई दिल्ली, पृ0सं0–148

सिंह0 ए0के0 (2015)य मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में अनुसंधान विधियां, नई दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन

गुप्ता0 एस0पी0 (2016)य आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन

Nautiaal and Uniyan, Deepti ¼2016½ "Schololy Research journal of Interdisplinary studies, online ISSN 2278-8808 SJIF 2016.

Kumar, Ashok ¼2017½ "International Journal of Advance in Social Science 1(2) Oct. 2017 ISSN-2347-5153, PP. 22- 29

Goyal, Dr.Rangita**] ¼2019½** International Journal of current advance research Vol-3, Issue 10, PP-43-47 October-2019

Sharma,Manjoo kumari **¼2022½** "International Journal of Advance in Social Science 2(3) Sep. 2012 ISSN-2347-5153, PP. 35-39

Krishan,s.s **¼2012½** "Schololy Research journal of Interdisplinary studies, online ISSN 2278-8808 SJIF 2012

Rahman] mohd.atavar **¼2011½** "Schololy Research journal of Interdisplinary studies, online ISSN 2278-8808 SJIF 2011

Gadiya] Dr.D.S **¼2008½** "Shodh journal of Multidisciplinary Innovative thoughts Vol. 01 ISSUE 01 July 2008.

Websites :

- http://www.shodgangotri.co.in
- http:// hi.m.wikipedia.org
- http://pdfs.sematicscholar.org
- http://www.scotbuzz.org
- http://hdl.handle.net
- http://www.researchgate.net
- https://www.guides.library.bloomu.edu
- http://en.m.wikipedia.org
- http://dictionary.cambridge.org
- www.google.co.in
- www.ugc.ac.in
- https://scholar.google.icom.
- http://egyankosh.ac.in
- vc.bridgew.edu
- www./journalijar.com